नारी और वेद

(पं० श्रीगोपालचन्द्रजी मिश्र, वेदाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य, मीमांसादर्शन-शास्त्री)

विवाहकालमें कन्यादान—पाणिग्रहणके बाद लाजाहोममें कन्या अपने लिये अपने मुखसे 'नारी' शब्दका सबसे पहले प्रयोग करती है (पा० गृ० १। ६। २, अ० १४। २। ६३); क्योंकि इससे पहले उसका नर-सम्बन्ध नहीं रहा है। 'नारीत्व' को प्राप्त करते ही वह दो प्रधान आदर्श अपने सामने अपने ही वचनमें जीवनके लिये रखती है—१-'**आयुष्मानस्तु मे पतिः।**', २-'एधन्तां ज्ञातयो मम।' मेरा पति पूर्ण आयुसम्पन्न हो और मेरी जाति (समाज)-की अभिवृद्धि हो। नारी होनेके बाद ही इसे 'सौभाग्य' की प्राप्ति होती है (अ० १४। १। ३८, पा० गृ० १। ८। ९)। सौभाग्यका प्रधान अर्थ पतिकी नीरोग स्थिति है (ऋक्० १०। ८६। ११)। पतिमती स्त्रियाँ अविधवा (सधवा) कहलाती हैं। घरमें सधवा स्त्रियोंका प्रथम स्थान है (ऋक्० १०। १८। ७)। इनको सर्वदा नीरोग, अञ्जन एवं घृतादि स्निग्ध पदार्थोंसे विभूषित, मूल्यवान् धातुओंसे समलंकृत अश्रुविहीन (ऋक्० १०। १८। ७), सुरूपिणी, हँसमुखी (३। ५८। ८), शुद्ध कर्तव्यनिष्ठ, पतिप्रिया (१। ७६। ३), सुवस्त्रा (१०। ७१। ४), विचारशीला (१। २८। ३), पतिपरायणा (१०। ८५। ४७) एवं पातिव्रत-धर्मनिष्ठ (पा० गृ० १। ८। ८) होना चाहिये। इन्हें अपने सत्-कर्तव्योंसे सास, ससुर, देवर तथा ननदके ऊपर साम्राज्य प्राप्त करना चाहिये। नारी होनेके साथ ही इनको 'पत्नी' पद भी प्राप्त हो जाता है, जिसके कारण ये अपने पतिके लिये कर्तव्यका फल प्राप्त कर लेती हैं (पाणिनि० ४। १। ३३)। शास्त्रीय विधानसे पुरुष-सम्बन्ध होनेपर ही स्त्री व्यक्ति-पत्नी कहलाती है। पत्नी पुरुषका आधा स्वरूप है (तै० ब्रा० ३। ३। ५)। इस पत्नीके बिना पुरुष अधूरा रहने (श० ५। २। १। १०) -के कारण सब यज्ञोंका अधिकारी नहीं बनता (तै० २। २। २। ६)। पत्नी लक्ष्मीका स्वरूप है (श० १३। २। ६। ७)।

१-तैत्तिरीयोपनिषद् २। ३; २-बृहदारण्यकोपनिषद् ६। ३। १३; ३-बृहदारण्यकोपनिषद् ६। ४। १६-१७; ४-छान्दोग्योपनिषद् ७। ३। १; ५-बृहदारण्यकोपनिषद् ४। ४। ३६।

इसका पूजन (सत्कार) करना चाहिये (मनु० ३।५६)। पुरुषोंद्वारा स्त्रियोंकी पूजा उनके कर्तव्योंसे की जाती है। पुरुषको संसारमें फँसा देनेमात्रसे पूजा प्राप्त करनेकी योग्यता नहीं हो सकती (१। ९२। ३)। पुरुषोंद्वारा सम्मानित होनेके कारण स्त्रियोंका वैदिक नाम 'मेना' (निरु० ३। ४। २१) है। पति इसमें गर्भरूपसे उत्पन्न होता है, इसलिये इसे 'जाया' कहते हैं (ऐ० ब्रा० ७। १३)। पुत्र-संततिसे स्त्रीकी प्रशंसा है (ऋक्० १०। ८६। ९)। बीस संतति होनेपर भी जिसके शरीरमें विकृति न आये, वह स्त्री महत्त्वशालिनी है (ऋक्० १०। ८६। २३), साधारण स्त्रीमें दस संततिका आधान होना चाहिये (१०। ८५। ४५)। अधिक संतति होनेसे जीवन कष्टमय हो जाता है (२। ३। २०)। स्त्रीके अङ्गोंमें बाहु, अँगुली (२। ३२। ७), भग (१०। ८६। ६)-की शोभनता, केशकी पृथुता (१०। ८६। ८), कटिभाग (श० ३। ५। १। ११), जघनकी विशालता (१०। ८६। ८), मध्यभागकी कृशता (श० १। २। ५। १६)-की प्रशंसा वेदोंमें मिलती है। स्त्रीको इस तरह (लज्जापूर्ण) रहना चाहिये कि दूसरा मनुष्य उसका रूप देखता हुआ भी न देख सके, वाणी सुनता हुआ भी पूरी न सुन सके (अर्थात् मन्दवाणी बोलनी चाहिये) (१०। ७१। ४)। स्त्रियोंको पुरुषोंके सामने भोजन नहीं करना चाहिये (श० १। ९। २। १२), स्त्रियोंको पुरुषोंकी सभामें बैठना उचित नहीं (श० १। ३। १। २१), स्त्री-समाजका मुखिया पुरुष होता है (श० १। ३। १। ९)। सूतका कातना, बुनना, फैलाना स्त्रियोंका कर्तव्य है (अथर्व० १४। १। ४५)। स्त्रियोंको अपने मस्तकके बालोंको साफ रखना चाहिये। मस्तकपर आभूषण भी पहनना चाहिये तथा 'शयन-विदग्धा'—सोनेमें चतुर भी अवश्य होना चाहिये (यजु० ११। ५६)। स्त्रीके पहने हुए वस्त्र पुरुषको नहीं पहनने चाहिये। इससे अलक्ष्मीका वास होता है (१०। ८५। ३०, ३४)। नारियोंको अपने नेत्रमें शान्ति रखनी चाहिये, पशुओं, मनुष्यों अर्थात् प्राणिमात्रके लिये हितकारिणी एवं वर्चस्विनी होना चाहिये (१०। ८५। ४४)। किसीकी हिंसाका भाव नहीं रखना चाहिये (श० ६। ३। १। ३९)। स्त्रीके हाव-भाव-विलासोंका प्राकृतिक उदाहरण देकर शिक्षाशास्त्रियोंने उच्चारणका प्रकार भी बतलाया है (या० शि० १। ६९; २। ६३, ६७, ७०)। स्त्रीको पति, श्वशुर, घर एवं समाजकी पुष्टिका पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये (अ० १४। २। २७)। पति-पत्नीका सम्बन्ध सुगम एवं कल्याणप्रद है। इस मार्गके आश्रयसे हानि नहीं होती, अपितु प्रशंसा एवं धनका लाभ प्राप्त होता है (अ० १४। २। ८)। वैदिक मार्गके अनुकरणसे दम्पति अपने संसारके दुर्गम मार्गको सुगमतासे पार कर सकते हैं (अ० १४। २। ११)।

इस संक्षिप्त लेखमें ऋ०—ऋग्वेद, य०—यजुर्वेद (शुक्ल), सा०—सामवेद, अ०—अथर्ववेद, श०—शतपथब्राह्मण, नि०—निरुक्त, या० शि०—याज्ञवल्क्य शिक्षा, पा० गृ०—पारस्करगृह्यसूत्रका संकेत है।